शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 8
Issue 2
15 July, 2017

हिन्दी यात्रा साहित्य की प्रवृत्तियाँ
(१९७५-२००० ई०)

बीज शब्द :

यात्रा साहित्य, हिन्दी, बीसवीं सदी, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य, कथेतर गद्य।

हिन्दी साहित्य में अन्य गद्य विधाओं की भांति ही भारतेन्दु युग से यात्रा साहित्य का प्रारम्भ हुआ और बीसवीं सदी के अंतिम चतुर्थांश तक आते-आते इस विधा ने पर्याप्त विकास किया। इस विकास क्रम की प्रक्रिया में हिन्दी का यात्रा साहित्य अपना स्वरूप परिवर्तित करता रहा। विवेच्य विधा के इस स्वरूप परिवर्तन को वर्णित कालावधि (1975-2000 ई.) के प्रवृत्यात्मक अध्ययन के अन्तर्गत देखा जा सकता है। आठवें दशक के हिन्दी यात्रा साहित्य विधा के लेखकों की रचनात्मक प्रौढ़ता तथा शैलीगत वैशिष्ट्य उनकी रचनाओं में प्रतिबिम्बित लेखकों की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति उभर कर सामने आयी है। पच्चीस वर्षों का यह समय प्रस्तुत विधा की प्रवृत्यात्मक अध्ययन के लिए विशेष महत्वपूर्ण है।

*****

प्रीतिजा अग्निहोत्री
शोध छात्रा, महात्मा गांधी चित्रकूट
ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
डी.ए.वी कालेज, कानपुर
E-mail : Singhypdr@gmail.com

हिन्दी यात्रा साहित्य की प्रवृत्तियाँ
(१९७५-२००० ई०)

यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। हम अगर मानव इतिहास पर नजर डालें तो पाएँगे कि मनुष्य के विकास की गाथा में यायावरी का महत्वपूर्ण योगदान है। अपने जीवन काल में हर आदमी कभी-न-कभी कोई-न-कोई यात्रा अवश्य करता है लेकिन सृजनात्मक प्रतिभा के धनी अपने यात्रा अनुभवों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर यात्रा-साहित्य की रचना करने में सक्षम हो पाते हैं। यात्रा साहित्य की विधा यात्रा साहित्यकार के यात्रा अनुभवों की संवेदनात्मक एवं कलात्मक प्रस्तुति है जिसमें विश्व की सांस्कृतिक झाँकी, मानव जीवन की समग्रता, सम्पूर्णता एवं प्रकृति की विराट सुन्दरता के दर्शन होते हैं। यात्रा साहित्य का उद्देश्य लेखक के यात्रा अनुभवों को पाठकों के साथ बाँटना और पाठकों को भी इन स्थानों की यात्रा के लिए प्रेरित करना है।

मनुष्य आदिकाल से यात्राएँ करता आ रहा है लेकिन भारतीय साहित्य में यात्रा के वृत्तांत को लिपिबद्ध करने की परम्परा दिखलाई नहीं देती। प्रसिद्ध समीक्षक डॉ0 रघुवंश यात्रा साहित्य के विषय में लिखते हैं - यात्रा का बहुत आकर्षण प्रकृति की पुकार में है। यायावर वही है जो चलता जाय, कहीं रूके नहीं, कोई बन्धन उसे कसे नहीं।''[1] बिना यात्रा के मनुष्य का व्यक्तित्व अधूरा है। यात्रा करने से मनुष्य का भौगोलिक ज्ञान बढ़ता है, साथ ही साथ वह विभिन्न संस्कृति के लोगों से साक्षात्कार करता है। यात्रा करने के कारण विस्थापन होता है और विस्थापन के कारण ही ललित कलाओं का विकास हुआ है। इस संदर्भ में प्रख्यात कथाकार राजेन्द्र यादव का यह कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है- ''यात्राएँ मनुष्य की आदिम वृत्ति या विश्वास है। सभी कलाओं का विकास विस्थापन से सम्भव हुआ है, यात्राओं में आप अकेले होकर भी अकेले नहीं होते। आपके साथ हर पल एक और व्यक्ति होता है जो साथ-साथ आपके इस यात्रा में जीता है, चलता है।''[2]

हिन्दी साहित्य में अन्य गद्य विधाओं की भांति ही भारतेन्दु युग से यात्रा साहित्य का प्रारम्भ माना जा सकता है। बीसवीं सदी के अन्तिम चतुर्थांश तक आते-आते इस विधा में भी पर्याप्त विकास हुआ। इस विकास क्रम में हिन्दी का यात्रा साहित्य अपना स्वरूप परिवर्तित करता रहा है। विवेचित समयावधि (1975-2000 ई0) में जिन साहित्यकारों ने यात्रा साहित्य विधा में रचनाएँ लिखी हैं उनमें से अधिकांश यायावर वृत्ति के नहीं हैं, अर्थात् भ्रमण और उससे अर्जित अनुभूतियाँ उनके लिए स्वयं में साध्य नहीं हैं इस सम्बन्ध में डॉ0 रेखा प्रवीण उप्रेती के विचार हैं - ''पत्रकार या लेखक होने के नाते की गई देश-विदेश की यात्राओं के अपने संस्मरणों को लिपिबद्ध करने के पीछे उनका उद्देश्य यात्रा के रोमांच को उद्घाटित करना या देश-विदेश की जानकारी देना नहीं रहा, यात्रा का क्रमवार ब्यौरा देना या अपनी प्रतिदिन की यात्रागत अनुभूतियों का प्रकाशन भी इनका उद्देश्य नहीं है बल्कि यात्रा के बहाने अपने परिवेश से बाहर निकलकर दूसरे परिवेश से संक्रमित अपने विचारों, अनुभवों या चिंतन की अभिव्यक्ति इनमें प्रमुख रूप से उभरी है।''[3] आठवें दशक में जो यात्रावृत्तांत लिखे गए हैं उसमें विदेश यात्रा से सम्बन्धित यात्रावृत्त की तुलना में भारत भ्रमण सम्बन्धी ग्रंथ कम हैं। इस दशक के अधिकांश रचनाकारों सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, यशपाल, गोविंद मिश्र, नगेन्द्र, प्रभाकर माचवे, श्रीकांत वर्मा, राजेन्द्र अवस्थी, विष्णुकांत शास्त्री आदि ने शैक्षणिक या सांस्कृतिक उद्देश्य के लिए की गई यात्राओं के यात्रावृत्त प्रस्तुत किए हैं।

विदेश यात्रा से सम्बन्धित यात्रावृत्तों में सोवियत संघ तथा यूरोप के विभिन्न देशों की यात्राओं से सम्बन्धित रचनाएँ अधिक हैं। इन रचनाओं में सोवियत संघ की साम्यवादी व्यवस्था की उपलब्धियों का लेखा-जोखा तथा यूरोपीय देशों के सांस्कृतिक स्वरूप और जीवन-शैली के विवेचन विश्लेषण की प्रवृत्ति प्रमुखता से दिखती है।

आठवें दशक की रचना 'अपोलो का रथ' में लेखक श्रीकांत वर्मा की यूरोप देश की यात्रा का उद्देश्य यात्रा की रूप-रेखा प्रस्तुत करना नहीं है बल्कि यात्रा में देखे गए यूरोप की चेतना को समझना है। यूरोप का भौगोलिक पक्ष यहाँ महत्वपूर्ण नहीं है। इस रचना में यूरोप के विभिन्न देशों, नगरों, स्थलों के भ्रमण से उत्पन्न संवेदनाओं, प्रश्नों और प्रतिक्रियाओं को अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। डॉ0 रेखा प्रवीण उप्रेती के शब्दों में - ''श्रीकांत वर्मा देश या प्रांत को उसके भौगोलिक, राजनैतिक तथा आर्थिक आधार पर नहीं बल्कि उसके सांस्कृतिक पहलुओं से पहचानने का प्रयास करते हैं।''[4] परिवेश

1. सिंह डॉ0 सुनील विक्रम, ''हिन्दी साहित्य का कथेतर गद्य सर्जना'' नमन प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2013 ई0, पृ0-55।
2. वही पृ0- 55।
3. उप्रेती डॉ0 रेखा प्रवीण, 'हिन्दी का यात्रा साहित्य (1960 से 1990)', हिन्दी बुक सेंटर नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2000 ई0, पृ0- 74
4. वही पृ0-76।

का चित्रण केवल लेखक की प्रतिक्रियाओं में प्रतिध्वनित होता है। कथाकार यशपाल की रचना 'स्वर्गोद्यान बिना साँप' मॉरीशस द्वीप की सरकारी यात्रा से सम्बन्धित कृति है। विवेच्य रचना में लेखक ने मॉरीशस की भौगोलिक स्थिति को तो स्पष्ट किया ही है साथ ही वहाँ रह रहे भारतीय मूल के लोगों द्वारा द्वीप में झेले गए संघर्ष और पीड़ा को भी प्रस्तुत किया है। मॉरीशस की वर्तमान स्थिति, समस्या और उपलब्धि को जानने की प्रवृत्ति विवेच्य यात्रावृत्त में विशेष रूप से परिलक्षित होती है। इसके लिए लेखक ने मॉरीशस देश के अतीत में झाँका है और वहाँ के इतिहास का संक्षिप्त रोचक और मार्मिक वर्णन शब्दबद्ध किया है।

विवेच्य काल की यात्रा साहित्य विधा की एक अन्य महत्वपूर्ण रचना 'कुछ रंग कुछ गंध' में लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने यात्रा का पूरा विवरण नहीं दिया बल्कि कुछ विशिष्ट अनुभवों, घटनाओं को स्थान दिया है जिन्होंने केवल लेखक की संवेदना को छुआ है। इस रचना में लेखक की भावनाओं और विचारों को समझने तथा सोवियत संघ के विषय में महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी देने की प्रवृत्ति उभर कर सामने आयी है। पुश्किन काव्य समारोह में भाग लेने के उद्देश्य से की गई इस यात्रा में लेखक की मन:स्थिति के बोध और चिंतन को अभिव्यक्ति मिली है। स्वयं लेखक का विचार है - 'सोवियत संघ जाते हुए मन में सैलानी का भाव नहीं रहा और न उसकी कृति 'हर राई रत्ती को मसाला' लगाकर प्रस्तुत किया गया चटपटा यात्रा संस्मरण है।'[5] लेखक की भावनाओं और विचारों को समझने, सोवियत संघ के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी देने और उनके हृदय की थाह पाने की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण रचना है। सोवियत संघ की ही यात्रा से सम्बन्धित एक अन्य 'सीधी सादी यादें' में लेखिका दुर्गावती सिंह ने वहाँ के बाह्य दृश्य जगत का वर्णन न करके अपने मनोजगत में उठती भावों की प्रतिध्वनि को शब्दबद्ध किया है।

आठवें दशक की अन्य महत्वपूर्ण रचनाओं 'सैलानी की डायरी', 'कहीं सुबह कहीं शाम', 'धुंधभरी सुर्खी', 'दोस्तों की दुनिया' आदि में भी विदेश यात्राओं का वर्णन है। इन वर्णनों में यात्रा के दौरान आए हुए भौगोलिक दृश्यों को ही लेखक ने प्रमुखता नहीं दी है बल्कि संवेदना की गहराई से उपजे अनुभवों और विचारों को भी रचना में वर्णित किया है। 'सैलानी की डायरी' रचना के 'यूरोप में' शीर्षक खण्ड में मुख्य रूप से पश्चिमी जर्मनी में बिताए गए दिनों की स्मृतियाँ हैं। राजेन्द्र अवस्थी की यह कृति उनकी साहित्य तथा साहित्यकारों में रूचि को प्रदर्शित करती है। अवस्थी जी स्वभाव से ही सैलानी प्रवृत्ति के रहे हैं। प्रस्तुत कृति में उन्होंने अपनी यात्राओं का सम्पूर्ण विवरण यानि ''सिलसिलेबार यात्रा का घटनाक्रम प्रस्तुत नहीं किया है। अपनी यात्राओं के दिनों की डायरी में अंकित वे अंश जो उनके अनुसार 'पब्लिक इंटरप्राइज' में आते हैं, उन्हीं को रचनाकार ने प्रस्तुत किया है।''[6] 'इंग्लैण्ड के यात्रा से सम्बद्ध संस्मरण में लेखक ने मुख्यत: वहाँ के प्रसिद्ध कवियों और लेखकों के जीवन से जुड़े स्थलों का वर्णन किया है। 'धुंधभरी सुर्खी' रचना में गोविंद मिश्र ने इंग्लैण्ड प्रवास के दौरान हुए अनुभवों को यात्रा-कथा निबद्ध किया है। लेखक की यह पहली विदेश यात्रा थी। विदेश यात्रा के प्रति अपनी ललक को गोविंद मिश्र ने स्वयं स्वीकार भी किया है। उनका यात्रावृत्त भौगोलिक या प्राकृतिक वातावरण, संस्कृतियों, राह में पड़ने वाले विभिन्न स्थानों की विशेषताओं, सामाजिक, राजनीतिक विशेषताओं, रोमांचकारी घटनाओं के वर्णन के साथ-साथ मानव मन की विभिन्न संवेदनाओं तथा जीवन के रहस्य को समझने-समझाने का प्रयास करने वाली चिंतनशील जीवन दृष्टि को भी व्यक्त करता है। लेखक गोविंद मिश्र को केवल देश-दर्शन कर लेना या दर्शनीय स्थलों को छू भर आना पर्याप्त नहीं लगता, उनके लिए देखा सुना हुआ भीतर अक्स हो जाना भी जरूरी है- 'इंग्लैण्ड को बाहर से और उससे भी ज्यादा भीतर से देखना चाहता हूँ। ऐसा किस तरह कर सकूँगा .... इस बारें में साफ नहीं हूँ। लेकिन ऐसा जरूर लगता है कि कुछ थमे-थमे देखा जाय ताकि जो देखा या सुना जाए वह अंदर अक्स होता चले।''[7] रचना में लेखक ने भिन्न-भिन्न संस्कारों के लोग, स्त्री-पुत्र, सहयात्री, लेखक, साहित्यकार आदि को रेखांकित किया है। स्वतंत्र रूप से प्रकृति का वर्णन उन्होंने कम ही किया है।

आठवें दशक की अन्य महत्वपूर्ण रचनाओं 'धूप में सोई नदी', 'मैं देखता चला गया', 'स्मरण को पाथेय बनने दो' में स्वदेश यात्रा का वर्णन है। इन रचनाओं में लेखकों का प्रकृति प्रेमी रूप उभर कर आया है। भारत के अनेक राज्यों के प्राकृतिक सौंदर्य तथा उन स्थलों की सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक

5. सक्सेना सर्वेश्वर दयाल, 'कुछ रंग कुछ गंध', लिपि प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1976 ई0, पृ0- 11।

6. अवस्थी राजेन्द्र, 'सैलानी की डायरी', पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1980 ई0, पृ0-8।

7. मिश्र गोविंद, 'धुँधभरी सुर्खी,' नेशनल पब्लिकेशंस, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1979 ई0, पृ0-10।

सत्ता दर्शाने की प्रवृत्ति रचनाओं में प्रतिबिम्बित होती है। 'स्मरण को पाथेय बनने दो' यात्रा साहित्य रचना में विष्णुकांत शास्त्री जी का विचार है- ''कोई भी स्थान, चाहे वह नगर हो या देश, केवल भूगोल का अंश नहीं होता। भूगोल यदि कलेवर है तो उसका प्राण तत्व है उसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक सत्ता और भूगोल के साथ-साथ इसी सत्ता में खोना-पाना बनता है।''[8] भारतीय राष्ट्र की भौगोलिक विषमता और सांस्कृतिक स्तर पर एक-सूत्रता को भी लेखकों ने अपनी स्वदेश यात्रा से सम्बन्धित रचनाओं में रेखांकित किया है। भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था की भावना तथा यहाँ की भव्य ऐतिहासिक धरोहरों व लोक परम्पराओं के प्रति गौरव की अनुभूति, स्वदेश यात्रा सम्बन्धी रचनाओं में प्रमुख रूप से उभरी है।

नवें तथा दसवें दशक की प्रकाशित तथा प्रसारित यात्रा साहित्य विधा की रचनाओं में जो बात या प्रवृत्ति विशेष रूप से परिलक्षित होती है, वह है लेखकों की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति। विवेच्य समयावधि के अधिकांश रचनाकारों शंकरदयाल सिंह, गोविंद मिश्र, विष्णु प्रभाकर, राजेन्द्र अवस्थी, रामदरश मिश्र, बल्लभ डोभाल आदि ने यायावरी प्रवृत्ति से प्रभावित रचनाएँ लिखी हैं। इन दशकों में स्वदेश यात्रा से सम्बन्धित रचनाएँ अधिक प्रकाशित हुई हैं। स्वदेश यात्रा से सम्बन्धित रचनाओं में 'हिमशिखरों की छाया में' ज्योतिपुंज हिमालय', 'यात्री का देश', 'पहली बारिश में छिटकती बूँदें', 'झूलती जड़ें', 'सौन्दर्य की नदी नर्मदा' आदि प्रमुख हैं। इन रचनाओं के केन्द्र में भारत के वे भू-भाग हैं जो पर्यटन की दृष्टि से अपेक्षित हैं।

'हिमशिखरों की छाया' में यात्रावृत्त में लेखक विष्णु प्रभाकर ने उत्तराखण्ड, जमुनोत्री तथा कश्मीर यात्रा का वर्णन किया है। इसी समयावधि की दूसरी रचना 'ज्योतिपुंज हिमालय' में उत्तरकाशी, गंगोत्री आदि स्थलों के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन है। यायावरी प्रवृत्ति के लेखकों को यात्रा के दौरान आने वाली कठिनाईयों से आनंद मिलता है और उनका रोमांच बढ़ जाता है। धार्मिक स्थलों के भ्रमण में धार्मिक भावना की प्रबलता उतनी नहीं रही, जितनी प्रकृति के आकर्षण की। प्रभाकर जी के यात्रावृत्तांतों की एक विशेषता यह भी है कि इनमें दृश्य भूमि के निवासियों के रहन-सहन, रीति-रिवाज और बोली-बाली की भी झलक मिलती है।

नवें, दसवें दशक के विदेश यात्रा से सम्बन्धित वृत्तांतों में इटली, जर्मनी, जापान, रूस, कोरिया, इंग्लैण्ड, अमेरिका से सम्बद्ध वृत्तांत प्रमुख हैं। आठवें दशक में सोवियत रूस की यात्रा केन्द्र में थी। नवें, दसवें दशक की विदेश यात्रा से सम्बन्धित रचनाओं 'दरख्तों के पार शाम', 'आँखों देखा हंगरी', 'हवा में तैरते हुए', 'इतिहास बनी यात्राएँ', 'तना हुआ इन्द्रधनुष', 'पड़ोस की खुशबू' आदि में वहाँ के विभिन्न पर्यटक स्थलों, प्रसिद्ध स्मारकों का वर्णन न होकर लेखकों की अपनी यात्राओं के ब्यौरे तथा उनसे जुड़े अनुभव अधिक हैं।

बीसवीं सदी के अन्तिम चतुर्थांश की यात्रा साहित्य विधा की प्रवत्तियों के अध्ययन से यह दृष्टिगत होता है कि प्रस्तुत पच्चीस वर्षों की इस अवधि में प्रकाशित, प्रसारित रचनाओं की प्रवृत्तियों में विभिन्नता है। आठवें दशक का हिन्दी यात्रा साहित्य रचना शैली की दृष्टि से समृद्ध है। आलोच्य दशक के अधिकांश लेखक साहित्य की अन्य विधाओं में भी लिखते रहें है इसलिए उनकी रचनात्मक प्रौढ़ता और शैलीगत वैशिष्ट्य उनकी यात्रा साहित्य की रचनाओं में भी प्रतिबिम्बित होता है। पूरी यात्रा का क्रमबद्ध वृत्तांत प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति इस दशक की रचनाओं में अपवाद स्वरूप ही देखने को मिलती है। अनुभूति या चिंतन की दृष्टि से महत्वपूर्ण यात्रा के प्रसंगों को लेखक ने रचनाओं का लेखन विषय बनाया है। नवें तथा दसवें दशक की रचनाओं में लेखकों की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति रचनाओं में उभर कर आयी है। विवेच्य विधा की प्रवृत्तियों के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' पुस्तक के सम्पादक डॉ0 नगेन्द्र ने लिखा है- ''वस्तुत: स्वतंत्रता के बाद प्रकाशित यात्रावृत्त सम्बन्धी कृतियों में किसी स्थान विशेष के सम्बन्ध में अपने अंतर्मन पर पड़े प्रभावों और इसके फलस्वरूप होने वाली प्रतिक्रियाओं के प्रत्यांकन की प्रवृत्ति विशेषरूपेण बलवती रही है।''[9] साहित्यिक विधाओं के विकास के साथ उनकी प्रकृति और स्वरूप में भी परिवर्तन होता है। हिन्दी यात्रा साहित्य भी विकास क्रम में अपना स्वरूप परिवर्तित करता रहा है।

8. शास्त्री विष्णुकांत, 'स्मरण को पाथेय बनने दो', हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1979 ई0, पृ0-166।

9. सं0 डॉ0 नगेन्द्र/ सुरेश चन्द्र गुप्त, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण -1973 ई0, पृ0- 826

◆◆◆